



हाइपोस्पेडिया और कॉर्डी क्या हैं?

हाइपोस्पेडिया लिंग का एक आम ढांचागत फर्क है, जहां यूरेश्वा (वह ट्यूब जो ब्लैडर से पेशाब को शरीर के बाहर ले जाती है) लिंग के सिरे के बजाय नीचे की तरफ होती है। यह छिद्र लिंग के अग्रभाग (ग्लान्स) से लेकर अंडकोश और गुदा के बीच की त्वचा तक कहीं भी हो सकती है।

हाइपोस्पेडिया के साथ अक्सर कॉर्डी नाम की स्थिति देखी जाती है। कॉर्डी लिंग का नीचे की ओर मुड़ा हुआ होना है। यह हाइपोस्पेडिया के साथ या उसके बिना भी हो सकता है।

हाइपोस्पेडिया के प्रकारों में ये शामिल हैं:

- डिस्टल या ग्लैनुलर:** सबसे आम रूप जब छिद्र लिंग के सिर के पास पाई जाती है।
- मिडशाफ्ट:** यह तब होता है जब लिंग के निचले भाग (शाफ्ट) के बीच में छिद्र पाई जाती है।
- पेनोस्क्रोटल:** यह तब होता है जब छिद्र उस जगह पाई जाती है जहां लिंग और अंडकोश जुड़ते हैं।
- पेरिनेल:** यह तब होता है जब छिद्र अंडकोश थैली के पीछे होती है। ये हाइपोस्पेडियास के सबसे गंभीर रूप हैं, और कम आम हैं।

यह स्थिति कितनी आम है?

हाइपोस्पेडिया हर 150-300 लड़कों में से एक को होता है। अगर किसी लड़के को हाइपोस्पेडिया है, तो 15% संभावना है कि उसके भाई को भी यह स्थिति होगी। जिनके बेटे को हाइपोस्पेडिया है, उन पिताओं में से लगभग 8% को भी यह स्थिति होती है।

यह स्थिति किस वजह से होती है?

हाइपोस्पेडिया का सही कारण पता नहीं है। माना जाता है कि इसके विकसित होने में कई कारण शामिल हैं। जेनेटिक्स, पर्यावरण और हॉर्मोन्स हाइपोस्पेडिया से प्रभावित होने के कारण हो सकते हैं।

हाइपोस्पेडिया का डायग्नोसिस कैसे होता है?

आमतौर पर, हाइपोस्पेडिया जन्म के समय ही पता चल जाता है। गलत जगह पर छिद्र के साथ, अग्रचर्म (फोरस्किन) अक्सर अधूरी होती है और एक हुड बनाती है। इसे डोर्सल हुड कहते हैं।

हाइपोस्पेडिया के संकेत और लक्षण क्या हैं?

हल्के हाइपोस्पेडिया वाले कुछ लड़कों में हाइपोस्पेडिया के शायद कोई लक्षण न मिलें।

अगर हाइपोस्पेडिया और/या कॉर्डी ज़्यादा गंभीर है और ठीक नहीं हुआ है, तो बच्चों को बड़े होने पर ये दिक्कतें हो सकती हैं:

- मूत्र की धार को नियंत्रित करना और उसकी दिशा निर्धारित करना मुश्किल हो सकता है
- जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, लिंग टेढ़ा हो सकता है, जिससे बाद में यौन क्रिया में समस्याएँ हो सकती हैं
- अगर मूत्र मार्ग का छिद्र अंडकोश के पास या पीछे है, तो उसे बाद में प्रजनन से संबंधित दिक्कतें हो सकती हैं

हाइपोस्पेडिया का इलाज कैसे होता है?

हाइपोस्पेडिया वाले कुछ मरीज़ों में कोई लक्षण न होने या मरीज़/परिवार की इच्छा के कारण निगरानी के अलावा कोई इलाज नहीं होता है। हाइपोस्पेडिया और कॉर्डी का शल्य उपचार लिंग का स्वरूप बदल सकता है और कुछ मरीज़/परिवार अपने डॉक्टर से बात करने के बाद इसे चुनते हैं।

कोई भी दवा कॉर्डी या हाइपोस्पेडिया को ठीक नहीं कर सकती, और बच्चों से यह उम्मीद नहीं की जाती कि वे इन शारीरिक स्थितियों से उबर जाएंगे।

सर्जरी से अक्सर हाइपोस्पेडिया ठीक हो सकता है। केयर टीम सर्जरी की सलाह दे सकती है ताकि:

- यूरेथ्रल ओपनिंग को लिंग के सिरे तक लाया जा सके। इससे खड़े होकर मूत्र की धार नियंत्रित हो सकती है।
- लिंग को सीधा करें (अगर कॉर्डी है) ताकि बाद में दर्दनाक इंटरकोर्स का खतरा कम हो सके।

पीडियाट्रिक यूरोलॉजिस्ट को शल्यचिकित्सा मरम्मत के दौरान लिंग की अग्रचर्म का इस्तेमाल करने की ज़रूरत पड़ सकती है, इसलिए यह सलाह दी जाती है कि हाइपोस्पेडिया वाले बच्चों का जन्म के समय खतना न किया जाए। शल्यचिकित्सा मरम्मत आमतौर पर चार से छह महीने की उम्र के बाद होती है, हालांकि इसे बाद में भी किया जा सकता है। सर्जरी आमतौर पर जनरल एनेस्थीसिया के तहत आउटपेशेंट बेसिस पर की जाती है जब मरीज़ सो रहा होता है। हाइपोस्पेडिया के ज़्यादा गंभीर रूपों में, शल्यचिकित्सा मरम्मत कई चरणों में की जा सकती है।

संभावित जटिलताएं

हाइपोस्पेडिया सर्जरी बहुत सफल हो सकती है, लेकिन कुछ संभावित जटिलताएं हो सकती हैं। कुछ मामलों में, एक छेद या फिस्टुला हो सकता है, और उस छेद से मूत्र रिस सकता है। यह समस्या ठीक करने के लिए और शल्यचिकित्सा की ज़रूरत पड़ सकती है। यूरेशा के अंदर निशान पड़ सकते हैं और यूरेशा पतला हो सकता है। इससे मूत्र के प्रवाह में दिक्कत हो सकती है और इसे भी शल्यचिकित्सा से ठीक करने की ज़रूरत होगी।

मरीज़ों को प्यूबर्टी के बाद तक जांच के लिए वापस आना पड़ सकता है।

Last Updated: 10/2025 per Jodie Johnson